



प्राकृतिक खेती से सतत कृषि

आराधिका त्रिपाठी, चन्द्र प्रकाश और संदीप कुमार

॥ भारत की कृषि व्यवस्था प्राचीन समय से प्रकृति पर आधारित रही है। पहले किसान स्थानीय संसाधनों, पशुपालन और परंपरागत ज्ञान का उपयोग करके खेती करते थे। उस समय रासायनिक खाद एवं दवाइयों का उपयोग नहीं के बराबर था। इससे मृदा, जल एवं पर्यावरण संतुलित बने रहते थे। लेकिन समय के साथ रासायनिक खादों और कीटनाशकों का अत्यधिक उपयोग शुरू हुआ। इससे उत्पादन बढ़ा, लेकिन मृदा की उर्वरता घटने लगी, भूमिगत जल स्तर गिरा और पर्यावरण प्रदूषण बढ़ा। आज समय की मांग है कि ऐसी कृषि पद्धति अपनाएं जो उत्पादन के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण और किसानों की आर्थिक स्थिति सुधारने में मदद करें। इसी संदर्भ में प्राकृतिक खेती एक प्रभावी विकल्प के रूप में सामने आई है। यह पद्धति मुख्यतः खेत पर उपलब्ध संसाधनों पर आधारित है, जिसमें गोबर तथा गौमूत्र से बने घोलों का उपयोग, फसल अवशेषों का पुनर्चक्रण, मल्लिचंग द्वारा नमी संरक्षण, मृदा की गुड़ाई तथा रासायनिक आदानों का बहिष्कार शामिल है। भारत सरकार ने इसे प्रोत्साहित करने के लिए परम्परागत कृषि विकास योजना के तहत भारतीय प्राकृतिक कृषि पद्धति कार्यक्रम शुरू किया है, जिसका उद्देश्य पारंपरिक कृषि ज्ञान को पुनर्जीवित करना और बाहरी रासायनिक आदानों पर निर्भरता घटाना है। ॥

प्राकृतिक खेती एक समन्वित एवं रासायनिकमुक्त कृषि प्रणाली है, जो परंपरागत कृषि ज्ञान और पारिस्थितिकीय सिद्धांतों पर आधारित है। यह पद्धति फसलों, वृक्षों और पशुधन को कार्यात्मक जैव विविधता के साथ एकीकृत कर उत्पादन क्षमता बढ़ाने, मृदा स्वास्थ्य सुधारने और जल संरक्षण सुनिश्चित करने में सहायक है।

प्राकृतिक खेती को एक लागत प्रभावी एवं दीर्घकालिक रूप से व्यवहार्य विकल्प

माना जाता है। यह पद्धति किसानों की बाहरी रासायनिक आदानों पर निर्भरता घटाने के साथ ग्रामीण आजीविका में योगदान देती है। इसका मूल दर्शन 'प्रकृति के साथ सामंजस्य' है, जो खाद्य सुरक्षा, पर्यावरणीय संतुलन, ग्रामीण पुनरुत्थान और सतत विकास को सुदृढ़ करता है।

यह प्रणाली मृदा की सेहत सुधारने, जल संरक्षण, उत्पादन बढ़ाने और लागत घटाने के साथ-साथ पारिस्थितिकी तंत्र को संतुलित बनाए रखती है। वर्तमान में आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, गुजरात और केरल में इसे बड़े पैमाने पर

अपनाया जा रहा है। यह कदम सतत कृषि की दिशा में महत्वपूर्ण है और सरकार के मिशन को बल देता है। इसके तहत आत्मनिर्भर और पर्यावरणीय दृष्टि से सशक्त भारत का निर्माण हो रहा है, साथ ही किसानों को सशक्त कर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई गति दी जा रही है।

प्राकृतिक खेती का अर्थ है: प्रकृति में उपलब्ध संसाधनों का उपयोग कर, बिना रासायनिक खाद और कीटनाशक के खेती करना। इसमें मृदा, जल, हवा, पशु और पौधों के बीच प्राकृतिक संतुलन बनाए रखा जाता है। इसे 'फुफुआका विधि' भी कहा जाता है, जिसे

भाकृअनुप-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय स्टेशन, कटराई, कुल्लू-175129 (हिमाचल प्रदेश)

पहल

- **आंध्र प्रदेश:** इस राज्य को प्राकृतिक खेती का मॉडल राज्य माना जाता है। राज्य सरकार ने आंध्र प्रदेश कम्युनिटी मैनेज्ड नेचुरल फार्मिंग कार्यक्रम शुरू किया है। इसका लक्ष्य वर्ष 2030 तक पूरे राज्य को 100 प्रतिशत प्राकृतिक खेती वाला बनाना है। अनंतपुर जिले के किसान श्री रामुलु ने प्राकृतिक खेती अपनाई। पहले प्रति एकड़ धान की खेती में लगभग 18,000 रुपये खर्च होते थे, जबकि प्राकृतिक खेती से लागत घटकर 6,000 रुपये रह गई।
- **कर्नाटक:** यहां किसानों के बीच जैडबीएनएफ बड़े पैमाने पर लोकप्रिय हुआ। राज्य सरकार ने श्री सुभाष पालेकर के मार्गदर्शन में कई प्रशिक्षण और जागरूकता अभियान चलाए।
- **हिमाचल प्रदेश:** राज्य की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि और बागवानी पर आधारित है। लगभग 90 प्रतिशत किसान छोटे और सीमांत हैं, जो पहाड़ी ढालों और सीमित जोत पर खेती करते हैं। प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना के तहत अपनाई गई। पांगी घाटी (चंबा जिला) को राज्य का पहला प्राकृतिक खेती उपमंडल घोषित किया गया।
- **उत्तर प्रदेश:** गंगा नदी के तटीय 27 जिलों में प्राकृतिक खेती को विशेष रूप से प्रोत्साहित किया गया है। योजना के तहत नदी से 10 कि.मी. के दायरे में रासायनिक खाद और कीटनाशक का उपयोग बंद किया गया। 1,000 से अधिक गांवों में यह पद्धति लागू हो चुकी है, जिससे नदी प्रदूषण को नियंत्रित किया जा सके।



प्राकृतिक पोषण से स्वस्थ उपज

सारणी: रासायनिक बनाम प्राकृतिक खेती

पहलू	रासायनिक खेती	प्राकृतिक खेती
उत्पादन लागत	अधिक (उर्वरक, कीटनाशक, बीज)	कम (स्थानीय संसाधन आधारित)
मृदा की गुणवत्ता	धीरे-धीरे कम होती है	लगातार बेहतर होती है
जल उपयोग	अत्यधिक	20-30 प्रतिशत कम
खाद्य गुणवत्ता	अवशेषयुक्त, पोषक तत्व घटते हैं	विशेष्युक्त, विटामिन और एंटी ऑक्सीडेंट अधिक
किसानों की स्थिति	बाहरी निवेश पर निर्भरता	आत्मनिर्भर, कम खर्च
पर्यावरणीय प्रभाव	प्रदूषण, कार्बन उत्सर्जन अधिक	कार्बन संचयन, प्रदूषण कम

और एग्रोइकोलॉजी को समर्थन देती है, जिसमें सूक्ष्मजीवों की भूमिका महत्वपूर्ण है। प्राकृतिक खेती की मुख्य तकनीकें जैसे-गोबर, गौमूत्र, बीजामृत, जीवामृत, घनजीवामृत, व्हाप्सा और मल्लिचंग का प्रयोग किया जाता है।

विशेषताएं

प्राकृतिक खेती से मृदा की उर्वराशक्ति में वृद्धि होती है, रसायनमुक्त उत्पादन होता है, जैव विविधता का संरक्षण, जल संसाधनों की सुरक्षा, कम उत्पादन लागत तथा किसानों

की आय एवं पर्यावरणीय स्थिरता में सुधार होता है।

चुनौतियां

शुरुआती वर्षों में उत्पादन में कमी की आशंका रहती है। मृदा को रसायनों के लंबे उपयोग के बाद पुनर्जीवित होने में समय लगता है। इस संक्रमण काल में आमदनी घट सकती है, जिससे आर्थिक असुरक्षा का आभास होता है।

प्रशिक्षण और तकनीकी जानकारी की



बिना रसायन भरपूर उत्पादन

जापानी कृषि वैज्ञानिक मासानोबू फुकुओका ने विकसित किया।

प्राकृतिक खेती एक बंद प्रणाली है, जो स्थानीय परिस्थितियों का लाभ उठाकर प्रकृति की नकल करती है और बाहरी मानवीय निवेश की आवश्यकता नहीं होती। यह पुनर्योजी कृषि

कमी के कारण अधिकांश किसानों के पास व्यावहारिक प्रशिक्षण का अभाव है और अपेक्षित परिणाम नहीं मिल पा रहे हैं।

बाजार व्यवस्था की कठिनाई के कारण संगठित बाजार और वितरण चैनलों की कमी है, जिससे किसानों को उचित मूल्य नहीं मिल पा रहा है।

नीतिगत और वित्तीय सहयोग के अभाव में सरकारी योजनाओं का लाभ सीमित रूप से पहुंच पाता है।

सरकारी योजनाएं

- **परंपरागत कृषि विकास योजना:** केंद्र सरकार की यह योजना प्राकृतिक व जैविक खेती के लिए है। इसके अंतर्गत राज्यों को प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए प्रोत्साहन दिया जाता है।
- **भारतीय प्राकृतिक खेती पद्धति कार्यक्रम:** पारंपरिक कृषि पद्धतियों और खेत में उपलब्ध जैव संसाधनों पर आधारित खेती को प्रोत्साहित करने हेतु यह योजना चलाई जा रही है। वर्ष 2020-21 में बीपीकेपी के अंतर्गत 2.84 लाख हैक्टर क्षेत्र कवर किया गया। इसमें आंध्र प्रदेश, केरल, छत्तीसगढ़, झारखंड और हिमाचल प्रदेश शामिल हैं।
- **पूर्वोत्तर मिशन:** जैविक और प्राकृतिक उत्पादों की मूल्य शृंखला विकास करना।



प्राकृतिक खेती के प्रमुख घटक

भारत की कृषि परंपरा सदियों से प्रकृति और स्थानीय संसाधनों पर आधारित रही है। हरित क्रांति ने खाद्य उत्पादन में वृद्धि की, लेकिन रासायनिक खादों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग ने मृदा की उर्वरता, जल स्रोतों और पारिस्थितिक संतुलन को गंभीर क्षति पहुंचाई। इस परिप्रेक्ष्य

में प्राकृतिक खेती न केवल पर्यावरण मित्र विकल्प है, बल्कि किसानों की आर्थिक स्थिति सुधारने और उपभोक्ताओं को सुरक्षित आहार उपलब्ध करवाने की दिशा में भी महत्वपूर्ण है।

प्राकृतिक खेती केवल एक पद्धति नहीं, बल्कि यह किसानों की आत्मनिर्भरता, उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य और पर्यावरण संरक्षण का संगम है। सफलता गाथाएं, तुलनात्मक आंकड़े और सरकारी योजनाएं दर्शाती हैं कि उचित प्रशिक्षण, बाजार सहयोग और वित्तीय प्रोत्साहन मिलने पर वर्ष 2030 तक भारत कृषि में वैश्विक आदर्श बन सकता है। प्राकृतिक खेती की तकनीकें जैसे-जीवामृत, बीजामृत, मल्लिचंग और व्हापसा खेत की उर्वरता पुनर्जीवित करती हैं, उत्पादन लागत घटाती हैं और कार्बन उत्सर्जन कम करके जलवायु परिवर्तन से निपटने में सहायक होती हैं।

यही कारण है कि आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, हिमाचल प्रदेश और उत्तर प्रदेश ने इसे नीति और योजनाओं के माध्यम से अपनाया है। भविष्य में भारत की बढ़ती जनसंख्या, खाद्य सुरक्षा, निर्यात बाजार और जलवायु संकट जैसी चुनौतियों का समाधान प्राकृतिक खेती जैसी टिकाऊ पद्धतियों में निहित है।

संभावनाएं

प्राकृतिक खेती आने वाले समय में भारतीय कृषि की दिशा बदलने की क्षमता रखती है। वर्तमान परिदृश्य में जब देश बढ़ती जनसंख्या, खाद्य सुरक्षा, पर्यावरणीय चुनौतियों और जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याओं से जूझ रहा है, तब इस पद्धति का महत्व बढ़ जाता है।

- **बढ़ती जनसंख्या और खाद्य सुरक्षा:** भारत विश्व का दूसरा सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश है, जहां खाद्य उत्पादन पर दबाव बना हुआ है। पारंपरिक रासायनिक खेती लंबे समय तक सहायक रही, किंतु इससे मृदा स्वास्थ्य और पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। ऐसे में प्राकृतिक खेती एक टिकाऊ विकल्प प्रस्तुत करती है, जो उत्पादन बनाए रख सकती है और मृदा उर्वराशक्ति को संरक्षित करती है।
- **निर्यात बाजार की संभावनाएं:** विश्वभर में जैविक और प्राकृतिक उत्पादों की मांग बढ़ रही है। यूरोप, अमेरिका और खाड़ी देशों के उपभोक्ता विषमुक्त आहार को प्राथमिकता दे रहे हैं। भारत यदि प्राकृतिक खेती अपनाता है, तो वैश्विक बाजार में मजबूत स्थान बना सकता है और किसानों की आय में लाभ होगा।
- **जलवायु परिवर्तन और मृदा क्षरण से निपटना:** रासायनिक खेती से मृदा की गुणवत्ता प्रभावित हुई है और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन बढ़ा है। प्राकृतिक खेती उत्सर्जन कम करने, मृदा क्षरण, जल प्रदूषण और जैव विविधता के ह्रास से निपटने का साधन है।
- **प्रशिक्षण और बाजार सहयोग की आवश्यकता:** प्राकृतिक खेती के विस्तार के लिए किसानों को प्रशिक्षण, तकनीकी सहयोग और बाजार उपलब्धता आवश्यक है। सरकार और निजी क्षेत्र मिलकर प्रोत्साहन दें, तो यह पद्धति मुख्यधारा कृषि प्रणाली का हिस्सा बन सकती है।